R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2024-26

मूल्य-7 रुपये, वर्ष-24, अङ्क-8 अगस्त 2024

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट (रजि.), अलीगढ़ (उ०प्र०) का
मासिक मुख स्वसमाचार पत्र

मङ्गलायतन

पंचम गति पायी अविकारी, हम करें वंदना सुखकारी।
रक्षाबंधन का पर्व चला, हमको भी शुभ संदेश मिला॥
वात्सल्य सहज ही विस्तारें, निःशंकित हो समता धारें।
निरपेक्ष मौन सबसे उत्तम, निर्ग्रन्थ मार्ग ही लोकोत्तम॥

तीर्थधाम चिदायतन, हस्तिनापुर में

श्री 1008 शान्तिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव

(रविवार, 1 दिसम्बर से शुक्रवार, 6 दिसम्बर 2024)

मङ्गल आमन्त्रण

आदरणीय सत्धर्म प्रेमी साधर्मीजन,

सादर जयजिनेन्द्र !

समस्त जिनधर्मभक्तों को जानकर हर्ष होगा कि परमोपकारी वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु की अनुकम्पा से, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावनायोग में, अखिल विश्व की आश्चर्यकारी, परमपवित्र तपोभूमि-हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, **तीर्थधाम चिदायतन** का अवतरण हो रहा है।

हस्तिनापुर वह गौरवशाली ऐतिहासिक एवं पौराणिकनगरी है, जहाँ पर तीन-तीन तीर्थंकरों (भगवान शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ एवं अरनाथ) के चार-चार कल्याणक हुए हैं। साथ ही यह पौराणिक स्थल भगवान मल्लिनाथ के समवसरण, भगवान आदिनाथ के प्रथम आहारदान तथा विष्णुकुमार के द्वारा अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनिराज पर हुए उपसर्ग निवारण का साक्षी रहा है। यह नगरी, जैन महाभारत के महानायक पाण्डवों एवं कौरवों की प्रसिद्ध राजधानी रही है। प्रतिवर्ष धर्मनगरी हस्तिनापुर में विश्व के अलग-अलग कोनों से लाखों की संख्या में दर्शनार्थी पधारते हैं।

इस संकुल के सम्बन्ध में देश के ख्यातिप्राप्त विद्वानों, श्रेष्ठियों एवं साधर्मियों ने अपनी हार्दिक अनुमोदना प्रदान कर हमारा उत्साहवर्धन किया है।

इस महान धार्मिक प्रकल्प **तीर्थधाम चिदायतन** में भगवान श्री शान्तिनाथ चिदेश जिनालय; श्री गन्धकुटी चौबीसी चिदेश जिनालय का भव्य **पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव रविवार, 1 दिसम्बर से शुक्रवार, 6 दिसम्बर 2024** तक होना निश्चित हुआ है। आप सब इस महामहोत्सव में सादर आमन्त्रित हैं।

आइये, तीर्थधाम चिदायतन संकुल निर्माण की अनुमोदना एवं हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र के दर्शन कर अपना जीवन धन्य करें।

——: सम्पर्कसूत्र :——

पण्डित सुधीर शास्त्री, मोबा. 97566 33800

श्री नवनीत जैन, नोएडा, मोबा. 8171012049

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट (रजि.), अलीगढ़ (उ.प्र.) का

मासिक मुखपत्र

वर्ष-24, अङ्क-8 (वी.नि.सं. 2550; वि.सं. 2081) अगस्त 2024

उठो रे सुज्ञानी जीव....

उठो रे सुज्ञानी जीव, जिनगुण गाओ रे-3 ।टेक ॥

निशि तो नसाई गई भानु को उद्योत भयो-2
ध्यान को लगाओ प्यारे नींद को भगाओ रे ॥
उठो रे सुज्ञानी..... ॥1 ॥
भववन चौरासी बीच, भ्रमे तो फिरत नीच-2
मोहजाल फन्द परयो, जन्म-मृत्यु पायो रे ॥
उठो रे सुज्ञानी..... ॥2 ॥
आरज पृथ्वी में आय, उत्तम जन्म पाये-2
श्रावक कुल को लहाये, मुक्ति क्यों न जाओ रे ॥
उठो रे सुज्ञानी..... ॥3 ॥
विषयनि राचि-राचि, बहुविधि पाप साचि-2
नरकनि जायके, अनेक दुःख पायो रे ॥
उठो रे सुज्ञानी..... ॥4 ॥
पर को मिलाप त्यागि, आतम के जाप लागि-2
सुबुद्धि बताये गुरु, ज्ञान क्यों न लाओ रे ॥
उठो रे सुज्ञानी..... ॥5 ॥

साभार : मंगल भक्ति सुमन

संस्थापक सम्पादक

स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, अलीगढ़

स्व. श्री पवन जैन, अलीगढ़

सम्पादक

डॉ. जयन्तीलाल जैन, मङ्गलायतन वि०वि०

सह सम्पादक

डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन

सम्पादक मण्डल

बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़

डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर

श्रीमती बीना जैन, देहरादून

सम्पादकीय सलाहकार

श्री चिरंजीलाल जैन, भावनगर

श्री प्रवीणचन्द्र पी. वोरा, देवलाली

श्री वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई

श्री श्रेयस् पी. राजा, नैरोबी

श्री विजेन वी. शाह, लन्दन

मार्गदर्शन

डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका

पण्डित अशोक लुहाड़िया, मङ्गलायतन

क्या - कहाँ

प्रथमानुयोग	धर्मी जीव की भावना	5
द्रव्यानुयोग	समयसार नाटक पर प्रवचन	8
	स्वानुभूतिदर्शन :	14
प्रथमानुयोग	हस्तिनापुर का अतिशयकारी इतिहास	17
करणानुयोग	भरतक्षेत्र के खण्ड	20
प्रथमानुयोग	कवि परिचय	22
करणानुयोग	श्रुत परम्परा एवं श्रुतज्ञान	24
द्रव्यानुयोग	जिस प्रकार-उसी प्रकार	27
	समाचार-दर्शन	28

शुल्क :

एक प्रति : 07.00 ₹

आजीवन (15 वर्ष) : 1000.00 ₹

प्रथमानुयोग

आगामी तीर्थधाम चिदायतन के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन प्रसंग में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा पंचकल्याणक पर किए गए प्रवचनों का धारावाहिक प्रकाशन किया जा रहा है।

जन्मकल्याणक प्रवचन

धर्मी जीव की भावना

अपने अन्तर में ज्ञान द्वारा अनुभवगोचर हो — ऐसा आत्मा है परन्तु वह अनुभव वाणी से नहीं कहा जा सकता और न वाणी द्वारा आत्मा समझा जा सकता है। शास्त्र कहते हैं कि बारह अङ्ग द्वारा भी मात्र स्थूल तत्त्व की बातें आयी है; सूक्ष्म तत्त्व तो केवली भगवान और ज्ञानियों के अन्तर में रह गया है। भगवान की वाणी में से गणधरदेव ने जितना झेला, उसका अनन्तवाँ भाग शास्त्र में रचित है और उसमें भी स्थूल कथन हैं। जैसे, ताजा घी का स्वाद चखने में आता है, परन्तु वाणी के द्वारा उसका सम्पूर्ण वर्णन नहीं हो सकता। इसी प्रकार चैतन्य का परिपूर्ण स्वरूप ज्ञान में ज्ञात होता है, परन्तु वाणी में उसका सम्पूर्ण वर्णन करने की सामर्थ्य नहीं है क्योंकि वाणी, आत्मा के स्वभाव से अन्य है।

जैसे, कोई महान बेरिस्टर घी चखे और दो वर्ष का बालक भी घी चखे, वहाँ उन दोनों को घी के स्वाद का ज्ञान तो एक समान है परन्तु उनमें से कोई भी वाणी के द्वारा सम्पूर्ण स्वाद को कहने में समर्थ नहीं है। इसी प्रकार चैतन्यमूर्ति आनन्दकन्द आत्मस्वभाव का ज्ञान करने में केवली भगवान पूरे है, अर्थात् बेरिस्टर के समान हैं और अविरत सम्यग्दृष्टि के मति—श्रुतज्ञान है, वे बालक जैसे हैं परन्तु दोनों के ज्ञान की जाति एक है, दोनों को आत्मा के अनुभव का स्वाद एक जाति का है, परन्तु दोनों में कोई भी वाणी के द्वारा आत्मा का वर्णन करने में समर्थ नहीं है।

ज्ञायकमूर्ति आत्मा, देह—मन—वाणी का कर्ता तो नहीं है, परन्तु देह—मन—वाणी की जो क्रिया स्वयं—स्वत: होती हो, उसका प्रेरक भी आत्मा नहीं है। आत्मा बोलने की इच्छा करे, वह इच्छा विकार है, उस इच्छा के कारण भी भाषा नहीं होती। शरीर पुद्गल की आहारवर्गणा में से होता है और भाषा तो भाषावर्गणा में से होती है; इसलिए शरीर के इस मुँह अथवा गले से भी भाषा नहीं होती, क्योंकि भाषा और शरीर दोनों के पुद्गल पृथक्—पृथक् हैं। जब मुँह भी भाषा नहीं बोलता, तो आत्मा भाषा बोले — यह बात ही कहाँ रही ?

देह—मन—वाणी, आत्मा के साथ एक क्षेत्र में स्थित हैं। उन एकक्षेत्रावगाही पुद्गलों का प्रेरक भी आत्मा नहीं है, तो फिर पुस्तक, पैसा, लक्ष्मी इत्यादि दूरक्षेत्रवर्ती पदार्थों की क्रिया का कर्ता तो आत्मा हो ही कैसे सकता है ? आत्मा तो ज्ञायकमूर्ति है और ये सब पदार्थ ज्ञेय हैं। आत्मा और इनके मात्र ज्ञेय—ज्ञायक सम्बन्ध के अतिरिक्त अन्य कोई सम्बन्ध नहीं है। यह समझे बिना धर्म का अन्य कोई मार्ग नहीं है। वीतराग का मार्ग यही है। पहले सत्समागम से ऐसा वस्तुस्वरूप सुनकर, अन्तर में विचार और मनन करना ही व्यवहार है, इसके अतिरिक्त बाहर की क्रिया में व्यवहार नहीं है।

शरीर की क्रिया होती है, वह तो जड़—परमाणुओं की अवस्था है, आत्मा उसकी व्यवस्था नहीं करता। जड़ की अवस्था ही उसकी व्यवस्था है; इसके लिये उसे ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। अज्ञानी जीव, परपदार्थों की व्यवस्था करने का अभिमान करता है, परन्तु वह भी परद्रव्यों का कर्ता या प्रेरक नहीं है। अपने को पर का प्रेरक माननेवाला मिथ्यादृष्टि है।

अज्ञानी कहता है कि यह एकान्त निश्चय है, परन्तु उस अज्ञानी को निश्चय और व्यवहार का भान ही कहाँ है ? उसे एकान्त और अनेकान्त के स्वरूप का भी पता नहीं है। आत्मा अपने ज्ञान की अवस्था को करता है, परन्तु पर में कुछ भी नहीं करता, इसका ही नाम अनेकान्त है और इस प्रकार

समझने पर परपदार्थों का अहङ्कार मिटकर अपने ज्ञानस्वभाव के सन्मुख होना धर्म है।

धर्म अद्‌भुत अलौकिक और अनन्त काल में नहीं प्रगट ऐसी अपूर्व वस्तु है। वह धर्म कैसे हो और आत्मा के जन्म—मरण का अन्त कैसे आये ? — इसकी यह बात है। यह ज्ञेय अधिकार है, इसमें सम्यक्त्व का अधिकार भी गर्भितरूप से आ जाता है। धर्मी जीव, शरीरादि समस्त परज्ञेयों को अपने से भिन्न परद्रव्य समझकर उनके प्रति अत्यन्त मध्यस्थ होकर स्वसन्मुख होता है, उसका यह वर्णन है।

मैं ज्ञायक आत्मा, शरीर—मन—वाणी का कर्ता नहीं हूँ, उनका करानेवाला नहीं हूँ, और उनके कर्ता का अनुमोदक भी मैं नहीं हूँ; मैं तो उनका ज्ञाता ही हूँ और वे सब ज्ञेय हैं; इस प्रकार ज्ञेय—ज्ञायक का भेदविज्ञान करके ज्ञानस्वभाव की प्रतीति करना अपूर्व सम्यग्दर्शन और मुक्ति का कारण है। यह अधिकार सम्यग्दर्शन को समझने के लिये अमूल्य और अलौकिक है।●● क्रमशः

प्रश्न :— जिनबिम्ब-दर्शन से निद्धति और निकांचित कर्म का भी नाश होता है और सम्यग्दर्शन प्रकट होता है—ऐसा श्री धवल ग्रन्थ में वर्णन आता है, तो क्या परद्रव्य के लक्ष्य से सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है ?

पूज्य गुरुदेवश्री :— श्री धवल ग्रन्थ में जो ऐसा पाठ आता है, उसका अभिप्राय यह है कि जिनबिम्बस्वरूप निज अन्तरात्मा निष्क्रिय चैतन्यबिम्ब है, उसके ऊपर लक्ष्य और दृष्टि जाने से सम्यग्दर्शन प्रकट होता है और निद्धति व निकांचित कर्म टलते है, तब जिनबिम्ब-दर्शन से सम्यग्दर्शन हुआ और कर्म टला - ऐसा उपचार से कथन किया जाता है। चूँकि पहले जिनबिम्ब के ऊपर लक्ष्य था, इसलिए उसके ऊपर उपचार का आरोप किया जाता है। सम्यग्दर्शन तो स्व के लक्ष्य से ही होता है, पर के लक्ष्य से तो तीन काल में हो सकता नहीं - ऐसी वस्तुस्थिति है और वही स्वीकार्य है।

द्रव्यानुयोग

श्री समयसार नाटक पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के धारावाही प्रवचन

कर्त्ता कर्म क्रिया द्वार प्रवचन

'वहै करतूति मूढ़ करै पै मगनरूप।' –वही भगवान की पूजा, व्रत, तप, दया, दान आदि शुभपरिणाम और हिंसा, झूठ, चोरी आदि अशुभ परिणाम अज्ञानी को आते हैं, उनमें वह तन्मय हो जाता है, मग्न हो जाता है। इसकारण वह राग में अंध होकर अर्थात् राग में मिठास का वेदन करके नये बंध को करता है। राग में मिठास को वेदता हुआ अज्ञानी मिथ्यात्व और अज्ञानादि के बंध और उसके फल को प्राप्त करता है। ज्ञानी को तो राग में एकता नहीं है अहम्पना नहीं है, मिठास नहीं है, इसकारण राग आकर चला जाता है, मिट जाता है और नवीन मिथ्यात्वादि कर्म नहीं बँधते हैं, ऐसा कहना है।

'मोक्षमार्गप्रकाशक' में तो स्पष्ट स्पष्टीकरण किया है कि ज्ञानी के भोग निर्जरा के कारण हैं, इससे कोई भोग का भाव निर्जरा का कारण नहीं है, वह तो बंध का कारण है; परन्तु ज्ञानी को अबंध स्वभाव की दृष्टि और ज्ञान के कारण शुद्धता बढ़ती है और अशुद्धता घटती है इसकारण निर्जरा कही गई है। अतः ज्ञानी की दृष्टि और ज्ञान का बल निर्जरा का कारण है, राग निर्जरा का कारण नहीं है। ज्ञानी के राग में एकता अथवा ममत्व नहीं होने से उसका अभाव हो जाता है।

मिथ्यादृष्टि जीव तो विवेकरहित, तल्लीन होकर, अहंबुद्धि सहित शुभाशुभभाव करता है। इसकारण वह दोनों भाव में बंध और उसके फल को प्राप्त करता है। विषय-कषाय से पाप बंध होता है और पूजा, दया, दान आदि के शुभभाव से पुण्य बंध होता है; परन्तु दोनों कर्म बंध के कारण हैं और दोनों का उत्पत्ति स्थान एक ही है। शुभभाव आत्मा के आश्रय से होता है और अशुभभाव पर के आश्रय से होता है –ऐसा नहीं है। दोनों ही प्रकार के भाव, निमित्त के लक्ष्य से पर को अनुसरकर ही उत्पन्न होते हैं; इसलिए दोनों बंध के कारण हैं।

बाहर से तो ज्ञानी-अज्ञानी की शुभ-अशुभ दोनों क्रिया समान दिखती हैं; परन्तु उनके भावों में (अभिप्राय में) अन्तर होने से फल भी भिन्न-भिन्न होता है। ज्ञानी की क्रिया विरक्तभाव सहित और अंहबुद्धि रहित होती है। दया, दान, व्रत, भक्ति आदि में शुभभाव रूप व्यवहार से भी धर्मी मुक्त होता है, उसमें रक्त नहीं है; इसलिए वह धर्मी को निर्जरा का कारण है। मिथ्यादृष्टि तो दोनों प्रकार की राग की क्रिया में तल्लीन है, उनको अपना स्वरूप मानता है, उनसे अपने को लाभ मानता है हितकर मानता है। इसकारण उसमें उन भावों से भिन्न रहने की सामर्थ्य नहीं है। अतः वह कर्म से बँधता है और उसके फल को प्राप्त करता है।

कल एक भाई आये थे, (कहते थे) कि-उलझन होती है, कुछ सुध नहीं पड़ती, क्या करना? भाई! निज स्थिर बिम्ब ज्ञानानन्द स्वभाव में दृष्टि स्थापित करना और ज्ञान को उसमें रोकना ही करने योग्य है, इसमें उलझन तो कहीं है ही नहीं। यह तो उलझन मिटाने का उपाय है।

कल लड़के प्रश्न लाये थे कि सिद्ध भी श्रद्धा के बल से संसार में वापिस नहीं आते, अतः श्रद्धा का बल ही मुख्य है न? हाँ, श्रद्धा के बल से इन्कार नहीं है; परन्तु उस श्रद्धा को जाना किसने? श्रद्धा को तो उसके विषय का पता नहीं है, उसे जाननेवाला तो ज्ञान है; इसलिए ज्ञान का भी उतना ही बल है, अतः श्रद्धा और ज्ञान दोनों का जोर साथ ही है।

समयसार की 11वीं गाथा तो जैनदर्शन का प्राण है। उसमें कहा है कि शुद्धनय के अनुसार बोध होने मात्र से श्रद्धा होती है, उसका नाम सम्यग्दर्शन है। शुद्धनय स्वयं तो ज्ञान है और उसका विषय त्रिकाल ध्रुव आत्मा है। उसकी प्रतीति सम्यग्दर्शन है।

देखो! यह जैन दर्शन का प्राण अर्थात् वस्तु दर्शन का प्राण! ऐसी गाथा में ज्ञान का जोर बताया है। अतः श्रद्धा का अथवा ज्ञान का अथवा ऐसे किसी भी एक विचार को प्रिय करके खेंचना नहीं चाहिए। जो ऐसा खिंचाव (पक्षपात) करता है, वह तो स्वच्छन्द हो जाता है और स्वच्छन्द होने से

एकान्त हो जाता है। थोड़े से अन्तर में बहुत अन्तर पड़ जाता है, इसका उसको पता नहीं चलता। सिद्ध को श्रद्धा के जोर से ही संसार की उत्पत्ति नहीं होती; परन्तु वह श्रद्धा किसके बल से हुई –यह भी उसमें समाहित करना चाहिए। ज्ञान का बोध होने मात्र से श्रद्धा होती है ऐसा कहा है। इसीप्रकार–

'निश्चय नयाश्रित मुनिवरों, प्राप्ति करे निर्वाण की' –इसका अर्थ करो। नय अर्थात् ज्ञान और उसका विषय अभेद आत्मा है। उसके आश्रय से निर्वाण की प्राप्ति होती है। इसलिए सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र तीनों ही उसके (अभेद आत्मा के) आश्रय से होते हैं। अरे! अनन्त ही गुणों की पर्यायें उसके आश्रय से होती हैं। एक पर्याय स्वसन्मुख झुकती है; तब अनन्त पर्याये स्वसन्मुख झुकती है। सभी गुण एक साथ ही हैं। व्याख्या करने में किसी जगह श्रद्धा की मुख्यता से तो किसी जगह ज्ञान की मुख्यता से कथन आता है; परन्तु उसमें खींचतान नहीं होती। जो दृष्टि का विषय है वही शुद्धनय का विषय है और उस विषय को ही शुद्धनय (निश्चयनय) कहा है।

इसप्रकार एक बात की खींचतान करने से तो टुकड़े होते जाते हैं और स्वच्छन्द बढ़ता जाता है– ऐसा नहीं होना चाहिए। जहाँ जो योग्य हो वैसा समझना चाहिए। श्रद्धा का बल है; परन्तु श्रद्धा स्वयं कौन है और उसका विषय क्या है?– यह श्रद्धा को पता नहीं है। श्रद्धा तो अंधी है। जाननेवाला तो ज्ञान है। ज्ञान के अतिरिक्त कोई गुण स्व अथवा पर को नहीं जानता। इसी कारण तो सभी गुणों को निर्विकल्प और ज्ञान को सविकल्प कहा गया है। ज्ञान की पर्याय सबको जानने का कार्य करती है; परन्तु उसको आश्रय तो ध्रुव का है– ऐसी बात है। जिससे यह तत्व मिला है; वह क्या कहना चाहता है, वह समझना चाहिए। समझे बिना कोई बात नहीं होती; परन्तु जीवों को अनादि से अटकने के कारणों का पार नहीं है।

आज तक जो कोई सिद्ध हुए हैं और जो कोई सिद्ध होंगे, वे भेदविज्ञान से ही सिद्ध हुए हैं और होंगे– ऐसा कहा है। श्रद्धा से सिद्ध हुए हैं– ऐसा नहीं कहा है।

श्रोता:- अन्य जगह समकित को भी सिद्ध होने का कारण कहा है?

पूज्य गुरुदेवश्री:- ये सभी गुण साथ ही हैं; परन्तु सबको जाननेवाला तो ज्ञान है। ज्ञान के अलावा जानेगा कौन? श्रद्धा विपरीत हो या सम्यक हो, उसको जाननेवाला तो ज्ञान है न! इसीलिए 'पंचाध्यायी' में तो कहा है कि किसी भी गुण की व्याख्या उसके ज्ञान के बिना नहीं हो सकती है; इसलिये ज्ञान प्रधान है।

लोगों को अभिमान हो जाता है कि हम तो श्रद्धा के जोरवाले हैं, ज्ञान के जोरवाले तो शिथिल हैं। 'पुरुषार्थ सिद्धयुपाय' में ज्ञान को शिथिल कहा हैं, वह तो द्रव्य-गुण-पर्याय के भेदवाले ज्ञान की बात है। शुद्धनय का विषय तो अभेद आत्मा है। निश्चय नयाश्रित मुनिवर ही निर्वाण की प्राप्ति करते हैं।

'समयसार' गाथा 17-18 में भी जाने हुए की ही श्रद्धा होती है-ऐसा कहा है। ज्ञानरहित श्रद्धा तो गधे के सींग के समान है।

श्रीमद्राजचन्द्रजी भी कहते हैं कि- दर्शनमोह को नष्ट करने वाला ज्ञान है। चारित्रमोह को वीतरागता नष्ट करती है। दर्शन-ज्ञान की तुलना में चारित्र में अनन्तगुना पुरुषार्थ चाहिए है; परन्तु उस चारित्र अथवा ज्ञानादि की पर्याय का लक्ष्य करने से चारित्र प्रकट नहीं होता, द्रव्य का लक्ष्य करने से चारित्र प्रकट होता है। पुरुषार्थ तो सब पर्याय में होता है; परन्तु पुरुषार्थ होता कब है?- कि अखण्ड द्रव्यस्वभाव का लक्ष्य करे, तब पुरुषार्थ प्रगट होता है।

यहाँ कहते हैं कि अज्ञानी को राग में एकता है। 'समयसार' की दूसरी गाथा में कहा है न..। 'जो दर्शन-ज्ञान-चारित्र में अर्थात् आत्मा में स्थित है वह 'स्वसमय' है और जो राग तथा पुद्गल कर्म में स्थित है उसको 'परसमय' जानो।' चैतन्यस्वरूप के भान रहित होने से अज्ञानी राग में अंधा हो गया है। दया, दान, व्रत, तपादि के विकल्प मेरे हैं और उनकी क्रिया से मेरा कल्याण है- इसप्रकार (मान कर) अज्ञानी राग में अंधा हो गया है। इसकारण वह बंध और उसके फल को प्राप्त करता है।

अब मिथ्यात्वी के कर्त्तापने की सिद्धि के लिए कुम्हार का दृष्टान्त दिया है। 'ज्ञानी के सभी परिणाम ज्ञानमय है' इसका अर्थ कलश टीका में ऐसा किया है कि (देखो! 26 वें कलश के अर्थ में) सम्यग्दृष्टि का द्रव्य शुद्धस्वरूप परिणमा है इसकारण जो कोई परिणाम बुद्धिपूर्वक अनुभवरूप है अथवा विचाररूप है अथवा व्रत-क्रियारूप है अथवा चारित्रमोह के उदय से क्रोध, माना, माया, लोभरूप है, वह समस्त परिणाम ज्ञान जाति के घटित होते हैं..। भाषा देखो! परिणाम ज्ञान जाति के हैं, उसका ज्ञान होता है, वह ज्ञान अपना है। रागादि विकल्प आते हैं उसीसमय उन सम्बन्धी ज्ञान होता है, वह राग की जाति का नहीं है; किन्तु ज्ञान की अपनी जाति का है और वह ज्ञान राग से भी नहीं, बल्कि अपने से हुआ है। इसीलिए कहा है कि ज्ञानी के जो कोई परिणाम हैं, वे संवर-निर्जरा का कारण हैं और अज्ञानी के समस्त भावों में राग में एकत्व बुद्धि होने के कारण अज्ञानजनित परिणाम हैं इसकारण वे बंध के कारण होते हैं।

राग से हटकर आत्मा की ध्रुवता का भान हुआ उस ज्ञान के काल में ज्ञानी को जो कोई रागादि परिणाम होते हैं; उनका ज्ञान है, वे परिणाम ज्ञान की जाति के हैं, अज्ञान की जाति के नहीं। इसलिए वे परिणाम संवर-निर्जरा के कारण हैं। राग होता है, वह ज्ञान जाति का नहीं है; परन्तु उसका ज्ञान होता है वह अपने से हुआ है, इसलिए वह ज्ञान जाति का है और अज्ञानी की तो दृष्टि ही राग-द्वेष, पुण्य-पाप आदि पर पड़ी है। इसकारण उसके परिणाम अज्ञान जाति के हैं, आत्मा की ज्ञान जाति के नहीं। अज्ञान छोड़कर ज्ञानमय परिणाम करने में पुरुषार्थ अपेक्षित है, यों ही हो जाये वैसा नहीं है।

अब 23 वें कलश के 24 वे पद में दृष्टान्त देते हैं।

मिथ्यात्वी के कर्त्तापने की सिद्धि पर कुंभकार का दृष्टान्त

ज्यौं माटीमैं कलस होनकी, सकति रहे ध्रुव।
दंड चक्र चीवर कुलाल, बाहजि निमित्त हुव॥
त्यौं पुदगल परवांनु, पुंज वरगना भेस धरि।
ग्यानावरनादिक स्वरूप, विचरंत विविध परि॥

बाहजि निमित्त बहिरातमा,
गहि संसै अग्यानमति।
जगमांहि अहंकृत भावसौं,
करमरूप ह्वै परिनमति ॥24॥

अर्थः- जिस प्रकार मिट्टी में घट रूप होने की शक्ति सदा मौजूद रहती है और दंड, चाक, धागा, कुंभकार आदि बाह्य निमित्त हैं, उसी प्रकार लोक में पुद्गलपरमाणुओं के दल कर्मवर्गणारूप होकर ज्ञानावरणीय आदि भांति भांति की अवस्थाओं में भ्रमण करते हैं, उन्हें मिथ्यादृष्टि जीव बाह्य निमित्त है। जो संशय आदि से अज्ञानी होता है सो शरीर आदि में अंहकार होने से वे पुद्गलपिंड कर्मरूप हो जाते हैं ॥24॥

काव्य - 24 पर प्रवचन

जिसप्रकार मिट्टी में घटरूप होने की शक्ति सदा मौजूद रहती है। जिससमय घड़ा होता है उससमय मिट्टी में घड़ा होने की योग्यता निश्चय से होती है। जब मिट्टी में से घड़ा होने का निश्चय काल होता है, तब दंड, चक्र, डोरी, कुम्हार, इत्यादि निमित्त उपस्थित होते हैं। इसीप्रकार लोक में पुद्गल परमाणुओं के दल कर्मवर्गणारूप होकर ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी आदि विविध जाति की अवस्थाओं में भ्रमण करते हैं, उनको बाह्य निमित्तरूप अज्ञानी जीव होते हैं। कर्म तो स्वयं बँधते हैं, परन्तु उसमें अज्ञानी-जीव निमित्त बनता है, ज्ञानी पुरुष कर्म बंधन में निमित्त नहीं होते।

'यह राग मैं हूँ, मैं पुण्य-पाप हूँ '-ऐसा जिसको संशय, विमोह और विभ्रमरूप भाव है, स्वरूप का भान नहीं है- ऐसे अज्ञानी जीवों को शरीरादि में अहंबुद्धि होने से उसका निमित्त पाकर कर्म स्वयं बँध जाते हैं। परमाणुओं में तो ऐसे कर्मरूप होने की योग्यता है और उनका निश्चय काल आ गया है, इस कारण कर्मरूप परिणमते हैं; परन्तु उसमें अज्ञानी जीवों के परिणाम निमित्तरूप कारण होते हैं। ज्ञानी को कर्म बंध नहीं है और न ज्ञानी उसके निमित्त हैं।

क्रमशः

स्वानुभूतिदर्शन : बहिनश्री की तत्त्वचर्चा

प्रश्न :- अनेक प्रकार से आचार्य भगवंत स्वभाव की महिमा करते हैं, वह हम पढ़ते हैं, सुनते हैं परन्तु अन्तर से महिमा क्यों नहीं आती ? महिमा-रुचि कैसे हो ?

समाधान :- सब कारण अपना ही है, अन्य किसी का नहीं; महिमा नहीं आने का कारण भी अपना ही है। स्वयं पुरुषार्थ करे तो महिमा-रुचि आवे, अन्तर में अपने को पहिचाने तो महिमा-रुचि हो। अपने को इतनी लगन नहीं लगी है, उत्कंठा नहीं हुई है, इसलिए महिमा-रुचि नहीं आती। स्वयं बाह्य में कहीं अटक जाता है, इसलिए महिमा नहीं आती। ऐसे ही अनन्त काल बीत गया उसमें भी सब कारण अपना है; अन्य किसी का नहीं।

प्रश्न :- सम्यग्दर्शन का विषय उपादेय है या सम्यग्दर्शन ?

समाधान :- सम्यग्दर्शन प्रगट करने की अपेक्षा उपादेय है, परन्तु वास्तव में सम्यग्दर्शन का विषय जो ध्रुवद्रव्य है, वह उपादेय अर्थात् ग्रहण करने योग्य है। सम्यग्दर्शन तो पर्याय है, और पर्याय के ऊपर दृष्टि करने की नहीं होती; दृष्टि तो ध्रुवद्रव्य पर करने की होती है; इसलिए वास्तव में तो परमपारिणामिकभावस्वरूप अनादि-अनन्त ध्रुव आत्मा उपादेय है। सम्यग्दर्शन प्रगट करना योग्य है, परन्तु पर्याय के ऊपर दृष्टि करने से सम्यग्दर्शन की पर्याय प्रगट नहीं होती, वह तो द्रव्य पर दृष्टि करने से प्रगट होती है। इसलिए वास्तव में तो ध्रुवद्रव्य परमपारिणामिकभावस्वरूप जो आत्मा है, वह ग्रहण करने योग्य है-उपादेय है। सम्यग्दर्शन, केवलज्ञान आदि प्रगट करने की अपेक्षा से सब उपादेय हैं; परन्तु उन पर दृष्टि करने से सुख प्रगट नहीं होता; इसलिए वास्तविक उपादेय तो ध्रुव आत्मा है। सम्यग्दर्शन प्रगट करने से सुख-आनन्द प्रगट होता है, इसलिए वह उपादेय है। इस प्रकार दोनों की अपेक्षाएँ भिन्न हैं। सम्यग्दर्शन, स्वानुभूति, केवलज्ञानादि सब उपादेय हैं, परन्तु वे पर्याय होने से उन पर दृष्टि देने से

सुख प्रगट नहीं होता। ध्रुव के ऊपर दृष्टि करने से (सुख) प्रगट होता है, इसलिए ध्रुव उपादेय है।

—इस प्रकार किसी अपेक्षा से सम्यग्दर्शन उपादेय है और किसी अपेक्षा से ध्रुव उपादेय है। उपादेय दोनों हैं परन्तु अपेक्षा भिन्न है। एक व्यवहार है और एक निश्चय है। परन्तु वह व्यवहार ऐसा नहीं है कि वह कुछ है ही नहीं। सम्यग्दर्शनादि अनन्त शुद्धपर्यायें वेदन में आती हैं, इसलिए उपादेय हैं। परन्तु वे अनन्त पर्यायें ध्रुव को ग्रहण करने से वेदन में आती हैं; इसलिए वास्तव में तो ध्रुव उपादेय है। सम्यग्दर्शन सर्वथा उपादेय नहीं हैं, ऐसा नहीं है, वह उपादेय है; परन्तु व्यवहार अपेक्षा से है और निश्चय-अपेक्षा ध्रुव उपादेय है।

प्रश्न :- आत्मा का स्वभाव तो स्व-पर प्रकाशक है; तो सम्यग्दृष्टि जीव को स्वानुभूति के काल में पर जानने में आता है या नहीं ?

समाधान :- स्वानुभूति के काल में उपयोग बाहर नहीं है, इसलिए परज्ञेय ज्ञात नहीं होते। अपना उपयोग अन्तर में है और उसमें अनन्त गुणों की पर्यायें जानने में आती हैं, इसलिए वहाँ भी स्व-परप्रकाशकपना मौजूद रहता है, उसका नाश नहीं होता। सम्यग्दर्शन-स्वानुभूति की पर्याय प्रगट होती है, उस समय स्वयं आनन्दगुण का वेदन करता है, अपने अनन्तगुण भी वेदन में आते हैं; इसलिए स्वयं अपने को जानता है और दूसरे गुण-पर्यायों को भी जानता है और इसलिए स्व-परप्रकाशकपना है। स्वानुभूति के काल में स्व को अर्थात् ज्ञान स्वयं अपने को जानता है और पर अर्थात् बाहरी ज्ञेय को नहीं जानता, किन्तु स्वयं अन्तर में ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञातास्वरूप ऐसे अपने को अभेदरूप से जानता है, अपनी अनन्त पर्यायों को जानता है; उन अनन्त पर्यायों के नाम नहीं आते, परन्तु अपने को अनन्त पर्यायों का वेदन होता है, उसे जानता है। आत्मा चैतन्यचमत्कार-स्वरूप है, वह अपनी अनेक प्रकार की पर्यायों को जानता है, वह अनुभव के काल में पर प्रकाशकपना है। तथा उपयोग बाहर हो तब वह बाहरी जानकारी करता है,

परन्तु उसमें एकत्व नहीं होता। (अनुभवकाल में) स्वयं अपना ज्ञायक रहता है, ज्ञाता की धारा चलती है; और जब उपयोग बाहर होता है, तब वह पृथक् रहकर पर को जानता है, अर्थात् स्वयं अपने को जानता है और दूसरे को भी जानता है; इस प्रकार सविकल्पदशा में स्व-परप्रकाशकपना है। तथा अन्तर में स्वयं अपने को जानता है और अपने अनन्त गुण-पर्यायों को जानता है, वह निर्विकल्पदशा के काल का स्व-परप्रकाशकपना है। अनेक प्रकार की पर्यायें उसको स्वानुभूति में परिणमित होती हैं, उन्हें जानता है तथा अपने को अभेदरूप से जानता है।—इस प्रकार सब जानता है, वह निश्चय स्व-परप्रकाशकपना है।

पर को जाने वह व्यवहार अर्थात् वह पर को नहीं जानता ऐसा उसका अर्थ नहीं है। व्यवहार अर्थात् दूसरे को नहीं जानता और दूसरे को जानता है, वह कथनमात्र है ऐसा नहीं है। पर को जानता है, परन्तु वह दूसरा-बाहर का ज्ञेय हुआ, इसलिए व्यवहार कहा जाता है। **क्रमशः**

तीर्थधाम चिदायतन आवास रजिस्ट्रेशन

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि ऐतिहासिक अतिशयकारी पौराणिक तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हस्तिनापुर द्वारा **तीर्थधाम चिदायतन में रविवार, 1 दिसम्बर से शुक्रवार 6 दिसम्बर 2024** तक आयोजित होने वाले **श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा-महोत्सव** में पधारने वाले साधर्मियों की आवास व्यवस्था हेतु **आवास रजिस्ट्रेशन पोर्टल** का शुभारम्भ किया गया है।

इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा-महोत्सव में पधारने वाले सभी साधर्मियों (जिन्हें आवास की आवश्यकता है अथवा जिन्हें आवास की आवश्यकता नहीं है) से विनम्र अनुरोध है कि आप इस आवास रजिस्ट्रेशन पोर्टल को अवश्य भरें, जिससे आपके रहने व भोजन की उचित व्यवस्था की जा सके। असुविधा से बचने के लिए आप रजिस्ट्रेशन अवश्य करें।

हमें आशा है कि आप इस व्यवस्था में पूर्ण सहयोग करेंगे एवं इस पोर्टल पर अपने साथ-साथ अन्य साधर्मीजनों को भी पंजीकृत कर धर्मलाभ हेतु अपनी सहभागिता सुनिश्चित करेंगे।

Awas Registration Link - Awas.chidayatan.com

सम्पर्क सूत्र - श्री अजय जैन - 8006409338

प्रथमानुयोग

....गतांक से आगे

तीर्थधाम चिदायतन

हस्तिनापुर का अतिशयकारी इतिहास

धार्मिक नगरी हस्तिनापुर का वर्णन उत्तरपुराण से

तब वह चिड़ा कहने लगा कि बोल तू पाँच पापों में से किसे चाहती है, मैं तुझे उसी की सौगन्ध दे जाऊँगा। उत्तर में चिड़िया कहने लगी कि पाँच पापों में से किसी में मेरी इच्छा नहीं है। तू यह सौगन्ध दे कि यदि मैं न जाऊँ तो इस तापस की गति को प्राप्त होऊं। हे प्रिय! यदि तू मुझे यह सौगन्ध देगा तो मैं तुझे अन्यत्र जाने के लिए छोड़ूँगी अन्यथा नहीं। चिड़िया की बात सुनकर चिड़ा ने कहा कि तू यह छोड़कर और जो चाहती है सो कह, मैं उसकी सौगन्ध दूँगा। इस प्रकार चिड़ा और चिड़िया का वार्तालाप सुनकर वह तापस क्रोध से संतप्त हो गया, उसकी आँखें घूमने लगीं, उसने क्रूरता वश दोनों पक्षियों को मारने के लिए हाथ से मजबूत पकड़ लिया, वह कहने लगा कि मेरे कठिन तप से जो भावी लोक होने वाला है, उसे तुम लोगों ने किस कारण से पसन्द नहीं किया? यह कहा जाये। तापस के ऐसा कह चुकने पर चिड़ा ने कहा कि आप क्रोध न करें इससे आपकी सज्जनता नष्ट होती है। क्या थोड़ी सी जामिन की छाँच से दूध नष्ट नहीं हो जाता? यद्यपि आप चिरकाल से घोर तपश्चरण कर रहे हैं तो भी आपकी दुर्गति का कारण क्या है? सो सुनिये। आप जो कुमार काल से ही ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे हैं वह संतान का नाश करने के लिए है। संतान का घात करनेवाले पुरुष की नरक के सिवाय दूसरी कौन-सी गति हो सकती है? अरे 'पुत्र रहित मनुष्य की कोई गति नहीं होती' यह आर्षवाक्य—वेदवाक्य क्या आपने नहीं सुना? यदि सुना है तो फिर बिना विचार किये ही क्यों इस तरह दुर्बुद्धि होकर क्लेश उठा रहे हैं? उसके मन्द वचन सुनकर उस तापस ने उसका वैसा ही निश्चय कर लिया सो ठीक ही है क्योंकि स्त्रीजनों में आसक्त रहनेवाले मनुष्यों के अज्ञान तप की यही भूमिका है। 'ये दोनों पक्षी मेरा उपकार करनेवाले हैं' ऐसा समझकर उसने दोनों पक्षियों को छोड़ दिया।

इस प्रकार उन दोनों देवों के द्वारा ठगाया हुआ दुर्बुद्धि तापस कन्याकुब्ज नगर के राजा पारत की ओर चला। वह मानो इस बात की घोषणा ही करता जाता था कि अज्ञानपूर्ण वैराग्य स्थिर नहीं रहता। वहाँ अपने मामा पारत को देखकर उस निर्लज्ज ने अपने आकार मात्र से ही यह प्रकट कर दिया कि मैं यहाँ कन्या के लिए ही आया हूँ। राजा पारत ने उसकी परीक्षा के लिए दो आसन रखे—एक रागरहित और दूसरा रागसहित। दोनों आसनों को देखकर वह रागसहित आसन पर बैठ गया।

उसने अपने आने का वृत्तान्त राजा के लिए बतलाया। उसे सुनकर राजा पारत बड़े खेद से कहने लगा कि इस अज्ञान को धिक्कार हो, धिक्कार हो। फिर राजा ने कहा कि मेरे सौ पुत्रियाँ हैं, इनमें से जो तुझे चाहेगी वह तेरी हो जायेगी। राजा के ऐसा कहने पर जमदग्नि कन्याओं के पास गया। उनमें से कितनी ही कन्याएँ जिसका शरीर तप से जल रहा है ऐसे जमदग्नि को अधजला मुर्दा मानकर ग्लानि से भाग गईं और कितनी ही भय से पीड़ित होकर चली गईं। लज्जा से पीड़ित हुआ वह मूर्ख तापस उन सब कन्याओं को छोड़कर धूलि में खेलनेवाली एक छोटी-सी लड़की के पास गया और केला का फल दिखाकर कहने लगा कि क्या तू मुझे चाहती है ? लड़की ने कहा कि हाँ चाहती हूँ। तापस ने जाकर राजा से कहा कि यह लड़की मुझे चाहती है। इस प्रकार वह लड़की को लेकर वन की ओर चला गया। पद-पद पर लोग उसकी निन्दा करते थे, वह अत्यन्त दीन तथा मूर्ख था। जमदग्नि ने उस लड़की का रेणुकी नाम रखकर उसके साथ विवाह कर लिया। उसी समय से ऐसी प्रवृत्ति—स्त्रियों के साथ तपश्चरण करना ही धर्म है, यह कहावत प्रसिद्ध हुई है। जिस प्रकार श्रद्धा विशेष के मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दो ज्ञान उत्पन्न होते हैं अथवा किसी मुनिराज के तप के बाह्य तप और आभ्यन्तर तप ये दो भेद प्रकट होते हैं, उसी प्रकार जमदग्नि के इन्द्र और श्वेतराम नाम के दो स्तुत्य पुत्र उत्पन्न हुए। ये दोनों ही पुत्र ऐसे जान पड़ते थे। मानो लोगों को प्रिय काम और अर्थ ही हों अथवा मिले हुए नय

और पराक्रम ही हों। इस प्रकार उन दोनों का काल सुख से बीत रहा था। एक दिन अरिंजय नाम के मुनि जो रेणुकी के बड़े भाई थे, उसे देखने की इच्छा से उसके घर आये। रेणुकी ने विनयपूर्वक मुनि के दर्शन किये। तदनन्तर पति से प्रेरणा पाकर उसने मुनि से पूछा कि हे पूज्य! मेरे विवाह के समय आपने मेरे लिए क्या धन दिया था? सो कहो, रेणुकी के ऐसा कहने पर मुनि ने कहा कि उस समय मैंने कुछ भी नहीं दिया था? हे भद्रे! अब ऐसा धन देता हूँ जो कि तीनों लोगों में दुर्लभ है। तू उसे ग्रहण कर। उस धन के द्वारा तू सुखों की परम्परा प्राप्त करेगी। यह कहकर उन्होंने व्रत से संयुक्त तथा शील की माला उज्ज्वल सम्यक्त्वरूपी धन प्रदान किया और काललब्धि के समान उनके वचनों से प्रेरित हुई रेणुकी ने कहा कि मैंने आपका दिया सम्यग्दर्शन रूपी धन ग्रहण किया। मुनिराज इस बात से बहुत ही संतुष्ट हुए। उन्होंने मनोवांछित पदार्थ देनेवाली कामधेनु नाम की विद्या और मन्त्र सहित एक फरशा भी उसके लिए प्रदान किया। किसी दूसरे दिन पुत्र कृतवीर के साथ उसका पिता सहस्त्रबाहु उस तपोवन में आया। भाई होने के कारण जमदग्नि ने सहस्त्रबाहु से कहा कि भोजन करके जाना चाहिए। यह कह जमदग्नि ने उसे भोजन कराया। कृतवीर ने अपनी माँ की छोटी बहिन रेणुकी से पूछा कि भोजन में ऐसी सामग्री तो राजाओं के घर भी नहीं होती फिर तपोवन में रहने वाले आप लोगों के लिए यह सामग्री कैसे प्राप्त होती है? उत्तर में रेणुकी ने कामधेनु विद्या की प्राप्ति आदि का सब समाचार सुना दिया। मोह के उदय से आविष्ट हुए उस अकृतज्ञ कृतवीर ने रेणुकी से वह कामधेनु विद्या माँगी। रेणुकी ने कहा कि हे तात! यह कामधेनु तुम्हारे वर्णाश्रमों के गुरु जमदग्नि की होमधेनु है अतः तुम्हारी यह याचना उचित नहीं है। रेणुकी के इतना कहते ही उसे क्रोध आ गया। वह क्रोध के वेग से कहने लगा कि संसार में जो भी श्रेष्ठ धन होता है, वह राजाओं के योग्य होता है। कन्दमूल तथा फल खाने वाले लोगों के द्वारा ऐसी कामधेनु भोगने योग्य नहीं हो सकती।

क्रमशः

करणानुयोग

भरतक्षेत्र के खण्ड

66. नयों के नाम एवं उनका सामान्य परिचय :

जिन सैंतालीस नयों से आत्मा का वर्णन किया गया है, वे निम्न प्रकार हैं—

1. द्रव्य नय, 2. पर्याय नय, 3. अस्तित्व नय, 4. नास्तित्व नय, 5. अस्तित्व-नास्तित्व नय, 6. अवक्तव्य नय, 7. अस्तित्व-अवक्तव्य नय, 8. नास्तित्व-अवक्तव्य नय, 9. अस्तित्व-नास्तित्व-अवक्तव्य नय, 10. विकल्प नय, 11. अविकल्प नय, 12. नाम नय, 13. स्थापना नय, 14. द्रव्य नय, 15. भाव नय, 16. सामान्य नय, 17. विशेष नय, 18. नित्य नय, 19. अनित्य नय, 20. सर्वगत नय, 21. असर्वगत नय, 22. शून्य नय, 23. अशून्य नय, 24. ज्ञान-ज्ञेय अद्वैत नय, 25. ज्ञान-ज्ञेय द्वैत नय, 26. नियति नय, 27. अनियति नय, 28. स्वभाव नय, 29. अस्वभाव नय, 30. काल नय, 31. अकाल नय, 32. पुरुषकार नय, 33. दैव नय, 34. ईश्वर नय, 35. अनीश्वर नय, 36. गुणी नय, 37. अगुणी नय, 38. कर्तृनय, 39. अकर्तृनय, 40. भोक्तृनय, 41. अभोक्तृ नय, 42. क्रिया नय, 43. ज्ञान नय, 44. व्यवहार नय, 45. निश्चय नय, 46. शुद्ध नय, 47. अशुद्ध नय

67. शलाका पुरुष :-

तीर्थंकर, चक्रवर्ती आदि प्रसिद्ध पुरुषों को शलाका पुरुष कहते हैं। प्रत्येक कल्पकाल में ये 63 होते हैं। 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण। अथवा 9 नारद, 11 रुद्र, 24 कामदेव व 14 कुलकर आदि मिलने से 24 भगवान के 24 माँ व 24 पिता इस प्रकार 169 शलाका पुरुष होते हैं।

68. आठ कर्मों के आठ सिद्धांत :

1. मूर्ति पर यदि कपड़ा पड़ा हुआ हो तो जिस तरह उसका ज्ञान नहीं होता है, उसका रूप नहीं दिखता है; उसी प्रकार **ज्ञानावरण** कर्म का पर्दा पड़ने से आत्मा का ज्ञान गुण ढक जाता है।

2. जिस तरह दरबान अर्थात् पहरेदार राजा का दर्शन नहीं करने देता है, उसी प्रकार **दर्शनावरण** कर्म आत्मा के दर्शन गुण का दर्शन नहीं होने देता है।
3. जिस तरह शहद में लिपटी हुई तलवार की धार चाटने से मीठी लगती है और साथ ही जीभ को काट डालती है, उसी प्रकार से **वेदनीय** कर्म आत्मा को सुखी-दु:खी करता है। यह आत्मा के अव्याबाध गुण का घात करता है।
4. जिस तरह शराब जीवों पर मोहना का अर्थात् बेहोशी का (अज्ञान का/पागलपन का) विस्तार करती है; उसी प्रकार **मोहनीय** कर्म आत्मा को मोहित कर डालता है। इस कर्म के संयोग से जीव पर-पदार्थों में इष्ट तथा अनिष्ट की कल्पना करता है और तद्रूप आचरण करता है अर्थात् इससे जीव के सम्यक्त्व और चारित्र गुण का घात होता है।
5. जिस तरह चोर का पैर काठ में दे देने से वह काठ उसकी स्थिति करता है, उसको कहीं हिलने-चलने नहीं देता है, उसी प्रकार से **आयु** कर्म जीव की भव-भव में स्थिति करता है। जब तक एक शरीर की आयु पूरी नहीं हो जाती है, तब तक जीव दूसरे शरीर में नहीं जा सकता है। इससे अवगाहनत्व गुण का घात होता है।
6. जिस तरह चित्रकार नाना प्रकार के चित्र बनाकर उसके जुदा-जुदा नाम रखता है; उसी प्रकार **नाम** कर्म एकेन्द्रियादि नाम वाले शरीर बनाता है। यह कर्म आत्मा के सूक्ष्मत्व गुण का घात करता है।
7. जिस प्रकार कुम्हार ऊँच-नीच अर्थात् छोटे-बड़े बर्तन बनाता है; उसी प्रकार से **गोत्र** कर्म ऊँच-नीच कुल में जीव को उत्पन्न कराता है। इससे अगुरुलघुत्व गुण का घात होता है।
8. जिस प्रकार भण्डारी राजा को दान देने से रोकता है; उसी प्रकार **अन्तराय** कर्म दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य में रुकावट करता है। यह वीर्य गुण का घात करता है।

क्रमशः

कविवर राजमल्लजी

राजस्थान के जिन प्रमुख विद्वानों ने आत्म-साधना के अनुरूप साहित्य आराधना को अपना जीवन अर्पित किया है, उनमें कविवर राजमल्लजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका प्रमुख निवास स्थान ढूँढाहढ़ प्रदेश और मातृभाषा ढूँढारी रही है। संस्कृत और प्राकृत भाषा के भी ये उच्चकोटि के विद्वान थे। सरल बोधगम्य भाषा में कविता करना इनका सहज गुण था। इन द्वारा रचित साहित्य के अवलोकन करने से विदित होता है कि ये स्वयं को इस गुण के कारण 'कवि' पद द्वारा संबोधित करना अधिक पसंद करते थे। कविवर बनारसीदासजी ने इन्हें 'पाँडे' पद द्वारा भी संबोधित किया है। जान पड़ता है कि भट्टारकों के कृपा पात्र होने के कारण ये या तो गृहस्थाचार्य विद्वान थे क्योंकि आगरा के आसपास क्रियाकाण्ड करनेवाले व्यक्ति को आज भी 'पाँडे' कहा जाता है। या फिर अध्ययन-अध्यापन और उपदेश देना ही इनका मुख्य कार्य था। जो कुछ भी हो, थे ये अपने समय के मेधावी विद्वान कवि।

जान पड़ता है कि इनका स्थायी कार्यक्षेत्र वैराट नगर का पार्श्वनाथ जिनालय रहा है। साथ ही कुछ ऐसे भी तथ्य उपलब्ध हुए हैं जो इस बात के साक्षी हैं कि ये बीच-बीच में आगरा, मथुरा और नागौर आदि नगरों से भी न केवल अपना सम्पर्क बनाये हुए थे बल्कि उन नगरों में भी आते-जाते रहते थे। इसमें संदेह नहीं कि ये अति ही उदाराशय परोपकारी विद्वान कवि थे। आत्म-कल्याण के साथ इनके चित्त में जनकल्याण की भावना सतत जागृत रहती थी। एक ओर विशुद्धतर परिणाम और दूसरी ओर समीचीन सर्वोपकारिणी बुद्धि इन दो गुणों का सुमेल इनके बौद्धिक जीवन की सर्वोपरि विशेषता थी। साहित्यिक जगत में यही इनकी सफलता का बीज है।

ये व्याकरण, छन्दशास्त्र, स्याद्वाद विद्या आदि सभी विद्याओं में पारंगत

थे। स्याद्वाद और अध्यात्म का तो इन्होंने तलस्पर्शी गहन परिशीलन किया था। भगवान कुन्दकुन्द-रचित समयसार और प्रवचनसार प्रमुख ग्रन्थ इन्हें कण्ठस्थ थे। इन ग्रंथों में प्रतिपादित अध्यात्मतत्त्व के आधार से जनमानस का निर्माण हो इस सदभिप्राय से प्रेरित होकर इन्होंने मारवाड़ और मेवाड़ प्रदेश को अपना प्रमुख कार्यक्षेत्र बनाया था। जहाँ भी ये जाते, सर्वत्र इनका सोत्साह स्वागत होता था। उत्तरकाल में अध्यात्म के चतुर्मुखी प्रचार में इनकी साहित्यिक व अन्य प्रकार की सेवाएँ विशेष कारगर सिद्ध हुईं।

कविवर बनारसीदासजी वि० 17वीं शताब्दी के प्रमुख विद्वान हैं। जान पड़ता है कि कविवर राजमल्लजी ने उनसे कुछ ही काल पूर्व इस वसुधा को अलंकृत किया होगा। अध्यात्मगंगा को प्रवाहित करनेवाले इन दोनों मनीषियों का साक्षात्कार हुआ है ऐसा तो नहीं जान पड़ता, किंतु आपके द्वारा रचित जम्बूस्वामीचरित और कविवर बनारसीदासजी की प्रमुख कृति अर्द्ध कथानक के अवलोकन से यह अवश्य ही ज्ञात होता है कि इनके इहलीला समाप्त करने के पूर्व ही कविवर बनारसीदासजी का जन्म हो चुका था।

रचनाएँ

आपकी प्रतिभा बहुमुखी थी इसका संकेत हम पूर्व में ही कर आये हैं। परिणामस्वरूप इन्होंने जिन ग्रंथों का प्रणयन किया या टीकाएँ लिखीं वे महत्त्वपूर्ण हैं। उनका पूरा विवरण तो हमें प्राप्त नहीं, फिर भी इन द्वारा रचित साहित्य में जो संकेत मिलते हैं, उनके अनुसार इन्होंने इन ग्रंथों की रचना की होगी, ऐसा ज्ञात होता है। विवरण इस प्रकार है —

1. जम्बूस्वामीचरित, 2. पिंगल ग्रंथ-छंदोविद्या, 3. लाटीसंहिता, 4. अध्यात्मकमल मार्तण्ड, 5. तत्त्वार्थसूत्र, 6. समयसार कलश बालबोध टीका और 7. पंचाध्यायी। ये उनकी प्रमुख रचनाएँ या टीका ग्रंथ हैं। यहाँ जो क्रम दिया गया है, संभवत: इसी क्रम से इन्होंने जनकल्याण हेतु ये रचनाएँ लिपिबद्ध की होंगी।

क्रमशः

करणानुयोग

श्रुत परम्परा एवं श्रुतज्ञान का स्वरूप

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति —

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति या प्राप्ति स्वाभाविक रूप से या पर उपदेश आदि से होती है। सम्यग्दर्शन से पूर्व जीव की अवस्था को बतलाने के लिए शास्त्रों में पंच लब्धियों का वर्णन आया है। तत्त्व विचार करने वाला जीव सम्यक्त्व का अधिकारी है; परन्तु इससे सम्यक्त्व हो ही हो—ऐसा नियम नहीं है; क्योंकि सम्यक्त्व होने से पूर्व पाँच लब्धियाँ होनी चाहिए।

अब लब्धियों का वर्णन करते हैं—

लब्धि नाम —

आचार्य नेमिचंद्र कहते हैं—

खयउवसमियविसोही, देसणपाउग्गकरणलद्धी य।
चत्तारि वि सामण्णा, करणं पुण होदि सम्मते॥

गोम्मटसार जीवकाण्ड, गाथा 651

अर्थात् क्षयोपशमिक, विशुद्धि, देशना, प्रायोग्य, करण ये पाँच लब्धियाँ हैं। इनमें पहली चार तो सामान्य लब्धियाँ हैं। भव्य, अभव्य—दोनों के ही संभव है, किन्तु करण लब्धि विशेष है। यह भव्य के ही हुआ करती है और इसके होने पर सम्यक्त्व नियम से होता है।

भाव यह है कि लब्धि का अर्थ प्राप्ति है। प्रकृत में सम्यक्त्व ग्रहण करने के योग्य सामग्री की प्राप्ति होना, इसको लब्धि कहते हैं। ज्ञानावरणादि घातिया अशुभ कर्मों के अनुभाग के उत्तरोत्तर कम होने को क्षायोपशमिक लब्धि कहते हैं।

निर्मलता विशेष को विशुद्धि लब्धि कहते हैं।

योग्य उपदेश की प्राप्ति को देशना लब्धि कहते हैं।

कर्मों की स्थिति अन्तः कोटा-कोटी के भीतर होने की योग्यता के मिलन को प्रायोग्य लब्धि कहते हैं।

अध:करण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण रूप परिणामों को करण लब्धि कहते हैं।

क्षयोपशम लब्धि

आचार्य नेमिचन्द्र कहते हैं —

कम्ममलपडलसत्ती पडिसमयमंणतगुणविहीणकया।
होदूणुदीरदि जदा तदा खओवसमलद्धी दु॥

लब्धिसार, गाथा 4

प्रतिसमय क्रम से अनन्तगुणी हीन होकर कर्ममलपटल शक्ति की जब उदीरणा होती है, तब क्षयोपशम लब्धि होती है।

जिस समय अशुभ कर्मों का अनुभाग प्रतिसमय अनन्त गुणा घटता हुआ उदय में आता है, जिससे तत्त्व विचार हो सके ऐसा ज्ञानावरणादि का क्षयोपशम हो, तब क्षयोपशम लब्धि होती है; क्योंकि उत्कृष्ट अनुभाग के अनन्तवें भाग मात्र सर्वघाती स्पर्द्धकों का उदयाभावी क्षय और देशघाती का उदय, उदय को न प्राप्त सर्वघाती स्पर्द्धकों का सदवस्थारूप उपशम की प्राप्ति का नाम क्षयोपशम लब्धि है।

विशुद्धि लब्धि

आचार्य नेमिचंद्र कहते हैं—

आदिमलद्धिभवो जो भावो जीवस्स सादपहुदीणं।
सत्थाणं पयडीणं बंधणजोगो विसुद्धलद्धी सो॥

लब्धिसार, गाथा 5

आदि (प्रथम) लब्धि होने पर साता आदि प्रशस्त (पुण्य) प्रकृतियों के बंध योग्य जो जीव के परिणाम वह विशुद्धि लब्धि है।

क्षयोपशम लब्धि के होने से साता वेदनीय आदि प्रशस्त प्रकृतियों के बंध में कारण जो धर्मानुराग शुभ परिणाम होता है और कषाय मंद होने रूप दशा की प्राप्ति को विशुद्धि लब्धि कहते हैं।

देशना लब्धि

आचार्य नेमिचंद्र कहते हैं—

छद्दव्वणवपयत्थोवदेसयरसूरिपहुदिलाहो जो।
देसिदपदत्थधारणलाहो वा तदियलद्धी दु॥

लब्धिसार, गाथा 6

छह द्रव्य और नव पदार्थ का उपदेश देने वाले, आचार्य आदि का लाभ अथवा उपदिष्ट पदार्थों को धारण करने का लाभ यह देशनालब्धि है।

जिनेन्द्र देव की वाणी सुनने समझने के भाव होना तथा उसके अवधारण के भावों का होना ही देशनालब्धि है। जहाँ उपदेश का निमित्त न मिले, वहाँ पूर्व संस्कार से यह लब्धि हो जाती है।

जिनेन्द्र के द्वारा दिए गए उपदेश को धारण करना विचार करना, देशनालब्धि है और यह स्वाध्याय भी है; क्योंकि स्वाध्याय में वाचना, पृच्छना आदि होते हैं।

देशना लब्धि को सम्यक्त्व में कारण बतलाते हुए आचार्य यतिवृषभ कहते हैं—

कणयधराधरधीरं मूढत्तय विरहिदं ह्यट्ठमलं।
जायदि पवयणपढणे सम्मद्दंसणमणुवमाणं॥

तिलोयपण्णती, भाग-1, गाथा 51

प्रवचन अर्थात् परमागम के पढ़ने पर सुमेरु पर्वत के समान निश्चल लोकमूढ़ता, देवमूढ़ता व गुरुमूढ़ता से रहित, शंकादि आठ दोषों से रहित अनुपम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है।

आचार्य जिनसेन कहते हैं -

देशनाकाललब्ध्यादि - बाह्यकारण - संपदि।
अन्तःकरणसामग्रयां भव्यात्मा स्याद् विशुद्धदृक्॥

महापुराण, सर्ग-9, श्लोक-116

जब देशनालब्धि, काल लब्धि आदि बहिरंग कारण तथा करण लब्धि रूप अन्तरंग कारणरूपी सामग्री की प्राप्ति होती है, तभी यह भव्य प्राणी विशुद्ध सम्यग्दर्शन का धारक हो सकता है। **क्रमशः**

"जिस प्रकार–उसी प्रकार" में छिपा रहस्य

जिस प्रकार– मुख की सुन्दरता या कुरूपता दर्पण में मात्र दर्पण की स्वच्छता से झलकती है परन्तु फिर भी दर्पण के अधीन नहीं है।

उसी प्रकार– सर्वज्ञ के ज्ञान में त्रिकालवर्ती पर्यायें झलकने पर भी वस्तु का परिणमन भगवान के ज्ञान के अधीन नहीं है।

जिस प्रकार– प्यासे से, दयालु पुरुष द्वारा जल पियो ऐसा कहे जाने पर वह तुरन्त अंजुलि बांध कर तैयार हो जाता है।

उसी प्रकार– मैं एकत्व–विभक्त आत्मा को दर्शाऊँगा ऐसा आचार्य देव द्वारा कहे जाने पर योग्य पात्र तुरन्त अन्तर्दृष्टि द्वारा स्वभाव की प्रतीति कर मोक्षमार्गी हो जाता है।

जिस प्रकार– सूत्र (डोरा) को छोड़ कर मात्र मोतियों को आधार से हार का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता ।

उसी प्रकार– त्रिकाली ध्रुव को छोड़ कर (भूलकर) मात्र क्षणिक पर्यायों में ही निजत्व करना भारी भूल है ध्रुव के बिना उत्पाद–व्ययरूप पर्याय की भी सिद्धि नहीं हो सकती ।

जिस प्रकार– दर्पण में पदार्थ प्रतिभासित होने पर भी उसकी एकरूपता स्वच्छता खण्डित नहीं हुई।

उसी प्रकार– अनन्त पदार्थों का प्रतिभास होने पर भी ज्ञान स्वभाव की स्वच्छता एकरूपता खण्डित नहीं होती।

जिस प्रकार– परमार्थ से दर्पण में पदार्थ नहीं झलकते। दर्पण की स्वच्छता ही झलकती है। पदार्थ सामने होवें फिर भी न झलकें तब तो दर्पण की अवस्था मलिन जानना।

उसी प्रकार– अनन्त पदार्थों का प्रतिभासन होना ज्ञान को दोष नहीं अपितु ज्ञान की निर्मलता, निर्दोषता एवं पूर्णता का ही द्योतक है।

जिस प्रकार– हीरा घन की चोट हँसते–हँसते सहता है, टूटता तो पत्थर है।

उसी प्रकार– ज्ञानी तो प्रतिकूलता को समतापूर्वक सहता है जबकि अज्ञानी उनमें घबराकर धर्म से टूटकर दुःखी होता है।

जिस प्रकार– लोक में किसी से मिलने की तीव्र इच्छा है तो उसे बुलाते है, न आवे तो स्वयं जाते है।

उसी प्रकार– भगवान तो सिद्धालय से हमारे पास आते नहीं। अतः श्रद्धालु तीव्र पुरुषार्थ करके उनके पास पहुँच जाते है, सिद्धों से मिलने की तीव्र अभिलाषा होनी चाहिए।

क्रमशः **संकलन – स्व० प्रो० पुरुषोत्तमकुमार जैन, रुड़की**

समाचार-दर्शन

शिलान्यास समारोह सानन्द संपन्न

जयपुर : पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर दिनांक 20 - 21 जुलाई 2024 को विद्वानों की संख्या दोगुनी करने के उद्देश्य को लेकर 8 मंजिला भवन निर्माण हेतु हजारों विद्वानों, श्रेष्ठीगणों व गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में शिलान्यास समारोह सानन्द संपन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. शांतिकुमार पाटिल व डॉ. मनीष जैन मेरठ के स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ और जैन समाज के प्रसिद्ध विद्वान पण्डित अभयकुमार शास्त्री देवलाली व ख्याति प्राप्त प्रतिष्ठाचार्य बालब्रह्मचारी अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियाधाना को ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशील कुमार गोदीका, महामन्त्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, मन्त्री शुद्धात्म प्रकाश भारिल्ल एवं राजस्थान सरकार के सहकारिता एवं उड्डयन मंत्री श्री गौतम दक तथा उदयपुर शहर के विधायक ताराचन्द जैन की उपस्थिति में प्रथम **ज्ञानदीप अलंकरण** से अलंकृत किया गया।

पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट विगत 47 वर्षों से सम्पूर्ण विश्व में जैनदर्शन के अध्ययन एवं अध्यापन हेतु कुशल विद्वानों के निर्माण में एक समर्पित संस्था है। इसी भावना के अनुसार विगत 21 जुलाई 2024 को टोडरमल स्मारक भवन में छात्रावास में अध्ययनरत शास्त्री विद्यार्थियों की संख्या वृद्धि हेतु एक सुन्दर भवन के शिलान्यास समारोह की प्रथम ईंट श्री अक्षयभाई दोशी, हितेन ए सेठ मुम्बई और श्री प्रदीप चौधरी किशनगढ़, श्री अशोक पाटनी सिंगापुर, श्री मुन्नाभाई कोलकाता, श्री अमित ईशु भाई सूरत, श्री अजितप्रसाद जैन दिल्ली, श्री प्रेमचन्द बजाज कोटा, श्री राजूभाई प्रतीकभाई शाह अहमदाबाद, श्री चम्पालाल भण्डारी बैगलोर, श्री बी.डी. जैन परिवार मुम्बई, श्री अरविन्दभाई गोंडल, श्री संजय दीवान सूरत, श्री साकेत बड़जात्या मुम्बई, श्री सुधांश कासलीवाल जयपुर और तीर्थधाम मंगलायतन से स्वप्निल जैन व पण्डितु सुधीर जैन आदि के द्वारा भवन निर्माण का शिलान्यास किया गया।

इस अवसर पर शिलान्यास सभा की अध्यक्षता जयपुर की सांसद श्रीमती मंजू शर्मा के द्वारा की गयी। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पंडित शुद्धात्म प्रकाश भारिल्ल और पंडित पीयूष शास्त्री जयपुर के द्वारा किया गया।

वैराग्य समाचार

जयपुर : वैद्य श्री सुशील कुमार शाह का आकस्मिक देहपरिवर्तन हो गया है। आप कुशल वैद्य थे, सम्पूर्ण भारत में आपके द्वारा साधु-सन्तों की जैन विधि-विधान

से रोगोपचार में वैयावृत्ति की जाती थी।

बण्डा : श्री कोमलचन्द जैन शिक्षक का आकस्मिक देहपरिवर्तन हो गया है। आपका सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज में उत्साही कार्यकर्ता के रूप में महतीय योगदान प्राप्त था। आपकी प्रेरणा से बण्डा एवं आसपास के क्षेत्रों से कई होनहारों ने जयपुर आदि विद्यालयों में अपना भविष्य उज्ज्वल किया।

गौरझामर : श्रीमती कुसुमलता भारिल्ल का आकस्मिक देहपरिवर्तन हो गया है। आप पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान से ओतप्रोत धार्मिक महिला थीं।

तीर्थधाम मङ्गलायतन परिवार दिवंगत आत्माओं के सुगतिगमन, बोधिलाभ एवं शीघ्र मुक्ति प्राप्ति की भावना भाता है।

'अमितगति श्रावकाचार'

आचार्य अमितगति द्वारा रचित चरणानुयोग पद्धति का ग्रन्थ 'अमितगति श्रावकाचार' का नवीन प्रकाशन किया गया है। जिसका हिन्दी अनुवाद बालब्र. कल्पना बहिन द्वारा किया गया है। सभी साधर्मियों को अध्ययन की प्रेरणा जागृत हो, इस उपलक्ष्य में सभी स्वाध्याय भवनों, मुमुक्षु संस्थाओं एवं प्रवचनकार विद्वानों को नि:शुल्क सप्रेम भेंट स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। डाक खर्च आपका स्वयं का होगा।

सम्पर्क : पण्डित सुधीर शास्त्री 9756633800; अभिषेक जैन 9997996346

षट्खण्डागम ग्रन्थ की वाचना अनवरत प्रवाहित

पन्द्रह (अ) पुस्तक की वाचना 01 जुलाई 2024 से प्रारम्भ

विद्वत् समागम – आदरणीया बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन, जयपुर

दोपहर	01.30 से 03.15 तक (प्रतिदिन)	**षट्खण्डागम (धवलाजी)**
रात्रि	07.30 से 08.30 बजे तक	भगवती आराधना ग्रन्थ का स्वाध्याय
	08.30 से 09.15 बजे तक	**समयसार ग्रन्थाधिराज के कलशों का व्याकरण के नियमानुसार शुद्ध उच्चारण सहित सामान्यार्थ**

नोट—इस कार्यक्रम में आप ZOOM ID-9121984198,

- Password - tm@4321 youtube channel - teerthdhammangalayatan

के माध्यम से भी शामिल हो सकते हैं।

दशलक्षण पर्व पर मङ्गलायतन में विशेष कार्यक्रम

तीर्थधाम मङ्गलायतन : यहाँ दशलक्षण पर्व 08 सितम्बर से 17 सितम्बर 2024 के अवसर पर बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबहिन और **जयपुर** से **पण्डित अरुण शास्त्री,** मङ्गलार्थी शालीन जैन, पण्डित समकित शास्त्री, द्वारा स्वाध्याय आदि गतिविधियों का लाभ प्राप्त होगा। मङ्गलायतन से दशलक्षण महापर्व के अवसर धर्मप्रभावनार्थ पण्डित अशोक लुहाड़िया, पण्डित सुधीर शास्त्री, डॉ. सचिन्द्र जैन, अभिषेक शास्त्री देश के विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रभावना के साथ-साथ तीर्थधाम चिदायतन के पंचकल्याणक के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहेंगे।

तीर्थधाम मङ्गलायतन में बाहर से पधारनेवाले सभी साधर्मियों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था समुचित रहेगी।

सम्पर्कसूत्र - श्री अशोक बजाज, 9997996346 (ऑफिस)
पण्डित सुधीर शास्त्री, 9756633800

सितम्बर 2024 माह के मुख्य जैन तिथि-पर्व

1 सितम्बर - श्रावण कृष्ण 14 **चतुर्दशी**
8 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 5
दशलक्षण महापर्व प्रारम्भ
9 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 6
श्री सुपार्श्वनाथ गर्भ कल्याणक
11 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 8 **अष्टमी**
श्री पुष्पदंत मोक्ष कल्याणक
12 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 9
पुष्पांजलि व्रत समा.
13 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 10
सुगंध दशमी
17 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 14
चतुर्दशी
दशलक्षण महापर्व समाप्त
श्री वासुपूज्य मोक्ष कल्याणक
18 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 15/1
श्री नेमिनाथ ज्ञान कल्याणक
19 सितम्बर - आश्विन कृष्ण 2
क्षमावाणी पर्व
श्री नमिनाथ गर्भ कल्याणक
25 सितम्बर - आश्विन कृष्ण 8
अष्टमी

मंगल अवसर

तीर्थधाम चिदायतन पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

हस्तिनापुर में, तीर्थधाम चिदायतन का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है, तीर्थधाम मंगलायतन के निर्देशन में ही तीर्थधाम चिदायतन का भव्यातिभभय पंचकल्याणक - 01 दिसम्बर से 06 दिसम्बर 2024 तक होना निश्चित हुआ है।

जगत में पंचकल्याणक सम्यग्दर्शन का सर्वोत्कृष्ट निमित्त कार्य है आप यहाँ के अभिन्न अंग हैं यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आप सपरिवार पधारे... आप सभी लोग तो पधार ही रहे हैं, साथ में और भी अपने मित्रों, परिजनों, साधर्मी जनों को भी लेकर आना है। ऐसी हमारी विनती है।

आप हमसे निम्नरूप से जुड़ सकते हैं —

पंचकल्याणक में जो भी पात्र बाकी है उनको भरा जाना है....

पद	संख्या
भगवान आदिनाथ की 71 इंच उन्नत श्वेत मार्बल की कायोत्सर्गवंत प्रतिमा	
भगवान महावीर की 71 इंच उन्नत श्वेत मार्बल की कायोत्सर्गवंत प्रतिमा	
ईशान इन्द्र-इन्द्राणी	
सानत इन्द्र-इन्द्राणी	
माहेन्द्र इन्द्र-इन्द्राणी	
8 नंबर से 12 नंबर पद इन्द्र	
13 नंबर से 16 नंबर पद इन्द्र	
लौकान्तिक देव	
माता-पिता	
महामंत्री	
यज्ञनायक	
1 से 8 वें नम्बर के राजा	
9 से 12 वें नम्बर राजा	
राजसभा के छड़ीदार	2
भूमिगोचर राजा	4

विद्याधर राजा	4
अष्टदेवी (6)	16
56 कुमारी	
चौबीसी जिनालय शिखर	
चौबीसी जिनालय शिखर कलश	
चौबीसी जिनालय वेदी	
मुख्य शिखर ध्वजा	
मुख्य तोरण द्वार	
सिंह द्वार	
मुख्य प्रवेश द्वार	
मुख्य निकास द्वार	
जिनवाणी विराजमानकर्ता	
श्री कुन्दकुन्दाचार्य फोटो	
श्री अकम्पनाचार्य फोटो	
पण्डित टोडरमलजी फोटो	
पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी फोटो	
रैम्पमार्ग प्रदर्शनी	
शान्तिनाथ जीवनगाथा	

यह अवसर चूकने जैसा नहीं है सभी किसी न किसी रूप में जुड़े, आपके जो भी भाव हो कृपया सूचित करें।

आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप हमारे आग्रह को अवश्य स्वीकार करके इस **पामर से परमात्मा** बनने के महान कार्य में अपनी सहभागिता अवश्य प्रदान करेंगे।

किसी का कोई सुझाव हो तो हमें अवश्य बतलाएँ।

धन्यवाद

सम्पर्क :-

पण्डित सुधीर शास्त्री, 9756633800 ; डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, 7581060200

मंगल सूचना

आदरणीय बन्धुवर, सादर जयजिनेन्द्र!

प्रतिमा प्रतिष्ठा के सन्दर्भ में

पौराणिक नगरी हस्तिनापुर स्थित **तीर्थधाम चिदायतन** में दिनांक 01 दिसम्बर 2024 से 06 दिसम्बर 2024 तक होनेवाले श्री 1008 शान्तिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव होने जा रहा है।

व्यवस्था की दृष्टि से सभी कार्यक्रम व्यवस्थित होवें। किसी को भी असुविधा न हो, उसके लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। आप अपना विवरण email द्वारा हमें भेज देवें।

पण्डित सुधीर शास्त्री, निर्देशक
तीर्थधाम मंगलायतन
Email : info@mangalayatan.com
Mob. : 9756633800

विवरण (प्रतिमाजी से संबंधित)

नाम .....
ट्रस्ट / मन्दिर / मण्डल .....
पता .....
मोबा. ..... ईमेल .....
प्रतिमा संबंधी विवरण .....

1. प्रतिष्ठा के लिए प्रतिमाएँ 28 नवम्बर 2024 की प्रातः काल तक ही स्वीकार की जा सकेंगी।
2. प्रतिमाओं के साथ आवेदन पत्र व प्रतिमाजी प्रतिष्ठा के बाद जिस जिनमन्दिर में विराजमान की जानी है, उस मन्दिर / समिति की लिखित स्वीकृति लेटर हैड पर भेज देवें।
3. धातु की 7 इंच तथा पाषाण की 11 इंच से छोटी प्रतिमाएँ प्रतिष्ठा के लिए स्वीकार नहीं की जा सकेंगी।
4. प्रतिष्ठा के लिए प्रतिमाजी का आकार, मुद्रा आदि आधार पर स्वीकृत तथा अस्वीकृत करने का पूर्ण एवं अन्तिम अधिकार आदरणीय प्रतिष्ठाचार्यजी, निर्देशकजी, कमेटी का होगा।
5. जिनकी प्रतिमाजी प्रतिष्ठा के लिए स्वीकृत होगी, उन्हें या उनके परिवार से कम से कम एक सदस्य को 30 नवम्बर 2024 से प्रतिदिन शान्तिजाप में बैठना आवश्यक होगा। यदि आप एक से अधिक प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा करा रहे हैं तो प्रत्येक प्रतिमाजी के लिए भिन्न–भिन्न सदस्य को शान्तिजाप में बैठना होगा।
6. कमेटी द्वारा जो भी सहयोग राशि निश्चित की जाएगी, उसे आपको जमा कराना होगा। प्रतिष्ठित प्रतिमाओं को 5–6 दिसम्बर 2024 को लेकर अपनी सुविधा से जाना होगा।

दिनांक : हस्ताक्षर

मंगल सूचना

आदरणीय बन्धुवर, सादर जयजिनेन्द्र!

सूचना/विमोचन/स्टॉल स्थान आदि से सम्बन्धित

पौराणिक नगरी हस्तिनापुर स्थित **तीर्थधाम चिदायतन** में दिनांक 01 दिसम्बर 2024 से 06 दिसम्बर 2024 तक होनेवाले श्री 1008 शान्तिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव होने जा रहा है।

व्यवस्था की दृष्टि से सभी कार्यक्रम व्यवस्थित होवें। किसी को भी असुविधा न हो, उसके लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। आप अपना विवरण email द्वारा हमें भेज देवें।

पण्डित सुधीर शास्त्री, निर्देशक
तीर्थधाम मंगलायतन
Email : info@mangalayatan.com
Mob. : 9756633800

विवरण (सूचना/विमोचन/स्टॉल)

नाम .....

ट्रस्ट/मन्दिर/मण्डल .....

पता .....

मोबा. ..... ईमेल .....

सूचना/विमोचन/स्टॉल .....

1. कार्यक्रम को समयानुसार परिवर्तन का अधिकार प्रतिष्ठाचार्य एवं प्रतिष्ठा समिति को रहेगा।
2. यदि आप मंच से कोई सूचना, आमन्त्रण अथवा साहित्य विमोचन करना चाहते हैं तो कृपया हमको 30 अक्टूबर 2024 तक अवश्य ही विवरण सहित सूचित करें ताकि हम आपकी समय पर व्यवस्था कर सकें तथा अपने कार्यक्रम में शामिल कर सकें।
3. आप कोई साहित्य केन्द्र अथवा स्टॉल लगाना चाहते हैं तो हमें 30 सितम्बर 2024 तक लिखित सूचित करें। ताकि उसकी व्यवस्था पूर्व में की जा सके।

दिनांक : हस्ताक्षर

स्वर्णजयंती महोत्सव सम्पन्न

इन्दौर : पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग में स्थापित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई के ऐतिहासिक स्वर्णिम पचास वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतवर्ष में हर्ष और उल्लासमय वातावरण बना हुआ है। उसी पावन प्रसंग में मध्यप्रदेश की नगरी इन्दौर में पचासवाँ स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया, साथ ही शास्त्री परिषद का गठन गौरव शास्त्री इन्दौर के निर्देशन में किया गया।

इन्दौर के साधनानगर स्थित पंचबालयति जिनालय में दिनांक 28 जुलाई 2024 को श्री सम्मेदशिखर विधान और पुरषार्थसिद्धिउपाय ग्रन्थ पर पूज्य गुरुदेवश्री के वीड़ियो प्रवचन एवं पण्डित शैलेशभाई अहमदाबाद का समयसार ग्रन्थ पर स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। 28 जुलाई 2024 को ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बसंतभाई दोशी, महामन्त्री श्री महीपालजी ज्ञायक, ट्रस्टीगण श्री भरतभाई टिम्बडिया, कोलकाता; श्री पद्मजी पहाड़िया, श्री विजय बड़जात्या, इन्दौर; पण्डित रजनीभाई दोशी; श्री सुशील बजाज (मुन्नाभाई), कोलकाता; श्री अशोक जैन, भोपाल; बालब्रह्मचारी हेमचन्दजी हेम; श्री बीनूभाई, मुम्बई; श्री नरेश लुहाड़िया, दिल्ली; श्री संदीप जैन, मुम्बई; श्री सुशील काला और इस अवसर पर भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के मन्त्री श्री हसमुखभाई गाँधी आदि की उपस्थिति में इन्दौर मुमुक्षु मण्डल द्वारा ट्रस्ट के पदाधिकारियों का भावभीना स्वागत किया गया, पाठशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा 'पामर से परमात्मा' नाटक का मंचन और इसी अवसर पर क्रमबद्धपर्याय विषय पर गोष्ठी का आयोजन शास्त्री परिषद द्वारा किया गया। जिसमें पण्डित संजय सिद्धार्थी एवं उपस्थित पण्डित सौरभ शास्त्री, अशोक शास्त्री, डॉ. विवेक शास्त्री, डॉ. प्रवीण शास्त्री आदि समस्त शास्त्री परिषद मंचासीन था। इसी अवसर पर पण्डित रजनीभाई दोशी के नेतृत्व में तीर्थधाम चिदायतन में आयोजित आगामी पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आमन्त्रण मंच से दिया। गोष्ठी का संचालन पण्डित सौरभ शास्त्री के द्वारा किया गया। और सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पण्डित विराग शास्त्री, जबलपुर द्वारा किया गया। सभी कार्यक्रमों में नीलेशजी और मनीषजी वात्सल्य का सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर इन्दौर के आसपास के सभी नगरों एवं ग्रामों के प्रतिनिधि मण्डल उपस्थित था और ट्रस्ट के पदाधिकारियों का परिचय एवं ट्रस्ट की कार्यशैली, ट्रस्ट के कार्यों की रूपरेखा का विस्तार से प्रस्तुतिकरण श्री महीपालजी ज्ञायक द्वारा किया गया। इसी शृंखला में आदरणीय अशोकजी बड़जात्या की उपस्थिति में इन्दौर मुमुक्षु मण्डल द्वारा ट्रस्ट के अध्यक्ष आदरणीय बसन्तभाईजी का भावभीना सत्कार किया गया।

Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2024-26

मुनिराज की परिणति में वैराग्य का ज्वार

जैसे पूर्णमासी के दिन पूर्णचन्द्र के योग से समुद्र में ज्वार आता है; उसी प्रकार **मुनिराज को पूर्ण चैतन्यचन्द्र के एकाग्र अवलोकन से आत्मसमुद्र में ज्वार आता है; वैराग्य का ज्वार आता है, आनन्द का ज्वार आता है, सर्व गुण-पर्याय का यथासम्भव ज्वार आता है।** यह ज्वार बाहर से नहीं, भीतर से आता है। पूर्ण चैतन्यचन्द्र को स्थिरतापूर्वक निहारने पर अन्दर से चेतना उछलती है, चारित्र उछलता है, सुख उछलता है, वीर्य उछलता है; सब कुछ उछलता है। **धन्य है वह मुनिदशा।**

(जिणसासणं सव्वं, 403, पृष्ठ 113)

पं. सं. : DELBIL/2001/4685

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक स्वप्निल जैन द्वारा **मङ्गलायतन** मुद्रणालय, आगरा रोड, अलीगढ़-202001 छपवाकर, 'विमलांचल', हरिनगर, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित। **सम्पादक :** डॉ. जयन्तीलाल जैन,मङ्गलायतन वि०वि०

If undelivered please return to -

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

Shri Adinath-Kundkund-Kahan Digamber Jain Trust

Harinagar, Agra Road, Aligarh-202001 (U.P.)

Ph. : 9997996346, 2410010/10; Fax : 2410019/22

info@mangalayatan.com www.mangalayatan.com